संगोष्ठी - संक्षिप्तिका

16 अक्टूबर, 2021

पंजीकरण	–	प्रातः	08:30 बजे
चाय–जलपान	–	प्रातः	09:00 से 09:45 बजे
उद्घाटन	–	प्रातः	10:00 से 11:30 बजे
भोजन	–	दोपहर	12:00 से 01:00 बजे
प्रथम तकनीकी सत्र	–	अपराह्न	01:30 से 02:30 बजे
हाई–टी	–	अपराह्न	02:30 से 03:00 बजे
द्वितीय तकनीकी सत्र	–	अपराह्न	03:15 से 04:30 बजे
चाय–जलपान	–	अपराह्न	04:30 से 05:00 बजे

17 अक्टूबर, 2021

तृतीय तकनीकी सत्र	–	प्रातः	09:30 से 10:30 बजे
पैनल डिस्कशन	–	प्रातः	10:45 से 12:30 बजे
भोजन	–	अपराह्न	12:30 से 01:30 बजे
विशिष्ट व्याख्यान	–	अपराह्न	01:45 से 02:45 बजे
हाई–टी	–	अपराह्न	02:45 से 03:15 बजे
समापन	–	अपराह्न	03:30 से 05:00 बजे
चाय–जलपान	–	सायं	05:00 बजे से

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत

तथा

गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

आश्विन शुक्ल एकादशी एवं द्वादशी, युगाब्ध-5123, वि.सं. 2078

तद्नुसार 16 एवं 17 अक्टूबर, 2021 ई.

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़ – गोरखपुर

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

☎ 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in • E-mail : mpmpg5@gmail.com

उद्घाटन समारोह

16 अक्टूबर, 2021

समय : प्रातः 10:00 से 11:30 • स्थान : श्रीराम सभागार

मंचासीन अतिथि

कार्यक्रम अध्यक्ष

प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त

कार्यकारी अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी संस्थान
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मुख्य अतिथि

डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय

राष्ट्रीय संगठन सचिव
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
नई दिल्ली

सारस्वत अतिथि

डॉ. हर्षवर्द्धन शाही

सूचना आयुक्त
उ.प्र. शासन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मुख्य वक्ता

प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी

अध्यक्ष
भारतीय इतिहास संकलन समिति
गोरक्षप्रान्त, उत्तर प्रदेश

प्राचार्य

डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्राचार्य
महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

संचालन एवं संयोजन

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र

अध्यक्ष
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

समापन समारोह

17 अक्टूबर, 2021

समय : अपराह्न 03:30 से 04:45 • स्थान : श्रीराम सभागार

मंचासीन अतिथि

कार्यक्रम अध्यक्ष

प्रो. राजवन्त राव

पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

मुख्य अतिथि

प्रो. रजनीश शुक्ल

कुलपति
महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र

विशिष्ट अतिथि

प्रो. हरीश शर्मा

आचार्य, हिन्दी विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

मुख्य वक्ता

प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य

अध्यक्ष
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

संगोष्ठी प्रतिवेदन

डॉ. प्रवीन कुमार त्रिपाठी

सहायक आचार्य
श्री गणेश राय पी.जी. कालेज
डोभी, जौनपुर, उत्तर प्रदेश

संचालन

डॉ. सर्वेश शुक्ल

पोस्ट डॉक्टोरल फेलो
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

संचालन समिति

मुख्य संरक्षक

प्रो. शिवाजी सिंह

पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

संरक्षक

डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय

राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

अध्यक्ष

प्रोफेसर हिमांशु चतुर्वेदी

अध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

उपाध्यक्ष

डॉ. ओमजी उपाध्याय

निदेशक, शोध एवं प्रशासन, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

डॉ. मनोज तिवारी

विद्वत प्रमुख, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

सचिव

प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य

सचिव, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम

उपाध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

सह–सचिव

डॉ. अजय कुमार सिंह

सीनियर एकेडमिक फेलो, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

सदस्य

डॉ. राजेश नायक
डॉ. त्रिभुवन नाथ त्रिपाठी
डॉ. रत्नेश कुमार त्रिपाठी
डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय
डॉ. अंजना राय
डॉ. कन्हैया सिंह
डॉ. मुकेश उपाध्याय
डॉ. शचीन्द्र मोहन
डॉ. राजेश कुमार
डॉ. अंबिका तिवारी
डॉ. सौरभ कुमार मिश्र
डॉ. राजेश धर दुबे
डॉ. विनोद रावत
डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी
डॉ. मुकेश दुबे
डॉ. अमिता अग्रवाल

परामर्शदात्री समिति

डॉ. देवी प्रसाद सिंह	अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली
प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा	महासचिव, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली
प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त	कार्यकारी अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र.
प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल	मा. कुलपति, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
प्रो. वैद्यनाथ लाभ	मा. कुलपति, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार
प्रो. संजीव शर्मा	मा. कुलपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, चम्पारण, बिहार
प्रो. सुष्मिता पाण्डेय	राष्ट्रीय संयोजक, महिला इतिहासकार परिषद, अ.भा.इ.सं.यो., नई दिल्ली
प्रो. सुजीत घोष	निदेशक, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता
प्रो. सच्चिदानन्द जोशी	सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
प्रो. रघुवेन्द्र तँवर	सदस्य, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
प्रो. सुमन जैन	प्राचीन इतिहास विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र.
प्रो. राजीव रंजन	सदस्य, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
प्रो. संतोष कुमार शुक्ल	आचार्य, संस्कृत विभाग, जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
डॉ. प्रज्ञा मिश्र	प्राचीन इतिहास विभाग, राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज

मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र. शासन
प्रबन्धक, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

संरक्षक

प्रो. उदय प्रताप सिंह

अध्यक्ष, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.

प्रो. राजेश सिंह

मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

प्रो. महेश कुमार शरण

सेवानिवृत्त आचार्य, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

अध्यक्ष

डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

संयोजक / सचिव

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सह–सचिव

डॉ. अभिषेक सिंह

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सदस्य

डॉ. विजय चौधरी
डॉ. आरती सिंह
डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह
सुश्री दीप्ति गुप्ता
डॉ. अनुभा श्रीवास्तव
श्रीमती विभा सिंह
श्री रमाकान्त दूबे
डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय
डॉ. शालू श्रीवास्तव
डॉ. सुधा शुक्ला
श्री हरिकेश यादव
सुश्री स्मिता दूबे
सुश्री शारदा रानी
डॉ. अभिषेक सिंह
श्रीमती कविता मन्ध्यान
श्रीमती पुष्पा निषाद
श्री मंजेश्वर
श्रीमती शिप्रा सिंह
श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह
श्री जितेन्द्र कुमार प्रजापति
डॉ. वेंकट रमन पाण्डेय
श्रीमती साधना सिंह
डॉ. बृजभूषण लाल
डॉ. नीलम गुप्ता
डॉ. नेहा कौशिक
डॉ. सान्त्वना श्रीवास्तव
सुश्री रितिका त्रिपाठी
श्री अरविन्द कुमार मौर्य

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत

तथा

गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भाद्रपद कृष्ण द्वादशी एवं त्रयोदशी, युगाब्ध-5123, वि.सं. 2078
तद्नुसार 16 एवं 17 अक्टूबर, 2021 ई.

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़ – गोरखपुर

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

☎ 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in • E-mail : mpmpg5@gmail.com

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

भारत का स्वातंत्र्य समर एक ऐसी ऐतिहासिक घटना है, जिसने भारत ही नहीं विश्व के अन्य भू–भागों पर भी अपनी छाप छोड़ी है। भारत के इस स्वातंत्र्य समर की पूर्णाहुति 15 अगस्त सन् 1947 ई. को देश की स्वतंत्रता के साथ हुई। भारत की राष्ट्रीय स्वाधीनता कैसे आई? क्या वह सिर्फ किसी एक महान व्यक्ति, किसी एक वर्ग या एक पार्टी की बदौलत आई? क्या किसी एक स्थान विशेष की घटना ने भारत को स्वतंत्र कराया? यदि हम उपरोक्त प्रश्नों का सूक्ष्म विश्लेषण करेंगे तो हम पाएगें कि राष्ट्रीय स्वाधीनता की प्राप्ति का श्रेय असंख्य व्यक्तियों, विभिन्न वर्गों एवं विभिन्न घटनाओं को है। यह श्रेय उन सभी ज्ञात–अज्ञात व्यक्तियों को जाता है जो देश की स्वाधीनता के लिए शहीद हो गए, जिन्होंने हँसते–हँसते फाँसी का फन्दा चूम लिया, जिन्होंने अपने जीवन के स्वर्णिम बसन्ती दिनों को काल कोठरी अथवा काले पानी के स्याह अंधियारों में न्यौछावर कर दिया। देश की स्वतंत्रता का श्रेय उन वीर सपूतों को है जिन्होंने पराधीनता की गर्मी से झुलसे आजादी के पौधे को बचाने के लिए, उसे हरा–भरा करने के लिए और उसे उत्तरोत्तर विकसित करने के लिए अपने रंगों में बहने वाले लहू के एक–एक कतरे से सींचा। यह हम सबके लिए गर्व की बात है कि देश के तत्कालीन नौजवानों ने इस सच्चाई को बहुत पहले ही समझ लिया था। निर्भीक और प्रसन्नचित्त होकर फाँसी के फन्दों को चूमते हुए नौजवानों के दिलों ने यह जरूर गाया होगा कि– **''सूख न जाए कहीं पौधा यह आजादी का, खून से अपने इसे इसलिए तर करते हैं।''** देश को आज़ाद कराने में इन नौजवानों की देन कम से कम उन नेताओं से कहीं ज्यादा है जो सत्याग्रह कर जेल गए थे और पहले दरजे के कैदी की हैसियत से चार–छः महीने या एक–दो साल बिताकर वापस आ गए थे। निःसन्देह राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय आन्दोलन का जन्म औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग और उनकी विचारधारा के वाहक नवीन बुद्धिजीवी और वृत्तिजीवी वर्गों के उदय के बाद हुआ। लेकिन इससे यह निष्कर्ष निकालना सरासर गलत होगा कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए लड़ने वाले सिर्फ यही वर्ग या यही लोग थे। आजादी के इस संग्राम में हिस्सा लेने वाले पूंजीपति, व्यापारी, मजदूर, दस्तकार, जमींदार, किसान, छात्र, शिक्षक, बुद्धिजीवी और वृत्तिजीवी सभी थे। इसमें कोई शक नहीं कि ये विभिन्न वर्ग अपने अलग–अलग विचारधाराओं को लेकर राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में शामिल हुए थे, तथापि सबका उद्देश्य एक था–देश की आजादी। उपरोक्त सभी वर्गों की भूमिका का समुचित विश्लेषण इतिहास में किया जाना चाहिए।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम का रास्ता और स्वरूप सदैव एक नहीं रहा। इसे यूँ कहा जा सकता है कि जैसे गंगा गंगोत्री से एक क्षीण धारा के रूप में निकलती हैं और जैसे–जैसे आगे बढ़ती हैं, वैसे–वैसे आस–पास की सरिताओं को अपने में समेटते हुए विशाल होती जाती हैं। ठीक वैसी ही स्थिति भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की हुई। इस समर के माडरेट, उग्रवादी, राष्ट्रवादी, क्रांतिकारी, साम्यवादी, समाजवादी एवं गाँधीवादी सभी विचारधाराएं शामिल होती गई और इसे एक विशाल नद का स्वरूप प्रदान किया। आवेदन–निवेदन से आरम्भ होकर इस संयुक्त नद ने वैधानिकतावादी, स्वदेशी, क्रांतिकारी, सशस्त्र–संग्राम, शांतिपूर्ण सत्याग्रह जैसे अनेक रूप धारण किया। अंततः उपरोक्त समस्त विचारधारा और क्रिया रूपी नद ने जन–आन्दोलन का एक ऐसा विक्षुब्ध महासागर का रूप धारण किया कि पराधीनता और औपनिवेशिक शक्तियाँ उसके प्रबल आघात के सामने न टिक सकीं। परिणामतः भारत का यह राष्ट्रीय महासमर पूर्ण हुआ और देश पराधीनता के दंश से मुक्त होकर स्वतंत्र हुआ।

भारत के स्वातंत्र्य समर का एक प्रमुख मार्ग जनपद गोरखपुर से भी होकर गुजरता है। गोरखपुर परिक्षेत्र अत्यन्त प्राचीनकाल से मध्य पूर्वी भारत का एक प्रमुख स्थल रहा है। यहाँ मानव गतिविधियों का सातत्य ईसा की अनेक सहस्त्राब्दियों पूर्व से ही परिलक्षित होता है। एक ओर यहाँ सोहगौरा–खैराडीह–इमलीडीह–नरहन इत्यादि मानव सभ्यता से सम्बन्धित आरम्भिक स्थल हैं, तो वहीं दूसरी ओर चौरी–चौरा, डोहरियाँ कला, पैना जैसे स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित स्थल देखने को मिलते हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गोरखपुर परिक्षेत्र और इससे जुड़ी हुई घटनाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हम कैसे भूल सकते हैं चौरी–चौरा की उस ऐतिहासिक घटना को जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया आयाम दिया। कैसे भूल सकते हैं इसी परिक्षेत्र के अमर शहीद बंधु सिंह को जिन्होंने अनेक अन्यायी और अत्याचारी अंग्रेजों का सिर काटकर तरकुलहाँ देवी के चरणों में अर्पित किया था। कैसे भूल सकते हैं हम पैना के उन वीर सपूतों को जिन्होंने अपना सर्वस्व त्यागकर राणा प्रताप जैसे ही घास की रोटी खायी और तालाबों से पानी पीया किन्तु बर्बर अंग्रेजों से लोहा लेते रहे। डोहरियाँ कला के उन रणबांकुरों को हम कैसे भूल सकते हैं, जिन्होंने अपने सीने पर गोली खाकर अपना जीवन माँ भारती को समर्पित कर दिया। हम कैसे–भूल सकते हैं श्रीगोरक्षपीठ और उसके तत्कालीन पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को, जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में न सिर्फ आगे बढ़कर गोरखपुर परिक्षेत्र का नेतृत्व किया, अपितु अपने दूरगामी चिंतन से इस क्षेत्र का शैक्षणिक उन्नयन भी किया। भाईजी के नाम से विख्यात हनुमान प्रसाद पोद्दार जी का योगदान भी अविस्मरणीय है जिन्होंने इस सम्पूर्ण झंझावात भरे माहौल में भी गीता–प्रेस के माध्यम से भारतीय संस्कृति का अबाध प्रसार जनमानस में करते रहे। इसी प्रकार बाबा राघव दास और उनके जैसे ही सैकड़ों ज्ञात–अज्ञात दिव्य व्यक्तित्वों ने भारतीय स्वतंत्रता समर में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया जिसका वर्तमान में अध्ययन, विश्लेषण एवं जनमानस में उनके उक्त कार्यों का प्रसरण अत्यन्त आवश्यक है।

उपरोक्त इन्हीं प्रकरणों एवं तथ्यों पर विचार–विमर्श करने हेतु महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर ने **''भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में''** विषय पर आगामी **16–17 अक्टूबर 2021** को **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** कराने का निर्णय लिया है। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गोरखपुर परिक्षेत्र के योगदान को नए सिरे से रेखांकित कर उसके विशिष्ट अवदानों से विद्वानों और जनमानस को जागरूक करने का मार्ग प्रशस्त करेगी। शोधार्थी संगोष्ठी के विविध आयामों के किसी भी विषय/शीर्षक पर अपना शोध–पत्र दे सकते हैं। सुविधा की दृष्टि से उपरोक्त विषय को निम्न उप–विषयों/उप–शीर्षकों में विभाजित किया जाएगा।

1. 1857 ई. का स्वतंत्रता संग्राम और गोरखपुर
2. भारत के स्वतंत्रता संग्राम के नायक अमर शहीद बंधू सिंह
3. डोहरियाँ कला – स्वाधीनता संग्राम के विशेष संदर्भ में
4. भारतीय स्वातंत्र्य जनजागरण में गीता–प्रेस का योगदान
5. भारत के स्वातंत्र्य समर में श्री गोरक्षपीठ की भूमिका
6. भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पथ पर मील का पत्थर चौरी–चौरा
7. गोरखपुर परिक्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानी
8. स्वातंत्र्य समर और तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मनोदशा
9. स्वातंत्र्य समर के मौखिक स्रोत

शोध-प्रपत्र

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध–प्रपत्र/आलेख में विषय वस्तु का उद्देश्य, सार–संक्षेप, बीज शब्द, प्रयुक्त विधितन्त्र एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों की सीमा में ही शोध–प्रपत्र स्वीकृत किये जायेंगे। शोध–पत्र हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में स्वीकृत होंगे। शोध–पत्र/आलेख लगभग 2500 शब्दों में होना चाहिए तथा 15 अगस्त 2021 तक ई–मेल mishrasubodh389@gmail.com पर पहुँच जाना चाहिए। प्राप्त शोध पत्र/आलेखों का प्रकाशन संगोष्ठी के पूर्व ही हो जायेगा। शोध–पत्र की हार्ड कापी ए–4 आकार के कागज पर कम्पोज होना चाहिए। हिन्दी भाषा के शोध–पत्र वॉकमैन चाणक्या प्रारूप में फॉन्ट साइज 14 में तथा अंग्रेजी भाषा के शोध–पत्र टाइम्स न्यू रोमन प्रारूप में फॉन्ट साइज 12 में महाविद्यालय के पते पर भेजें।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क शोधार्थियों हेतु रू. 500/– तथा प्राध्यापकों हेतु रू. 700/– निर्धारित है। आमंत्रित अतिथियों/विषय–विशेषज्ञों को पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं होगी। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में **'प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़'** के नाम से अथवा नकद संगोष्ठी के समय पंजीकरण के दौरान देय अनुमन्य होगा।

यात्रा/आवास/भोजन-व्यवस्था

आमंत्रित अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञों को उनके आने–जाने का व्यय आयोजन समिति द्वारा देय होगा। सभी के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से निःशुल्क रहेगी किन्तु आने की पूर्व सूचना देना आवश्यक है।

गोरखपुर

गोरखपुर महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर–पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के लगभग सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल, सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित हैं। भगवान बुद्ध का गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग 90 किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण–स्थली कुशीनगर 50 किमी. की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन सन्त एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के पोषक सन्त कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से 20 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग 100 किमी. है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क–मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डु गोरखपुर से 400 किमी. की दूरी पर है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक की जा सकती है। नगर–क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें गोरखनाथ–मंदिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मंदिर आदि प्रमुख हैं। अक्टूबर माह में गोरखपुर का मौसम आर्द्र रहता है, रात में हल्की ठण्ड पड़ती है। तापमान सामान्य बना रहता है।

प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य
सचिव
भारतीय इतिहास संकलन समिति
गोरक्षप्रान्त
मो. : 7007747982

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
संगोष्ठी संयोजक/सचिव
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज
जंगल धूसड़, गोरखपुर
मो. : 9452971570, 6394313107

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित 2005 ई.

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

संगोष्ठी संक्षिप्तिका

16 अक्टूबर, 2021

पंजीकरण	प्रातः 08:30 से
जलपान	प्रातः 09.00 से 09:30 बजे
उद्घाटन सत्र	प्रातः 10.00 से 12.20 बजे
भोजन सत्र	अपराह्न 12.30 से 01.30 बजे
प्रथम तकनीकी सत्र	अपराह्न 01.30 से 02.40 बजे
चाय	अपराह्न 02.40 से 03.15 बजे
द्वितीय तकनीकी सत्र	अपराह्न 03.15 से 04.30 बजे
हाई–टी	सायं 04.30 से 05.00 बजे

17 अक्टूबर, 2021

तृतीय तकनीकी सत्र	प्रातः 09:30 से 10:45 बजे
पैनल डिस्कसन	प्रातः 11.00 से 12:15 बजे
भोजन सत्र	अपराह्न 12.30 से 01.30 बजे
विशिष्ट व्याख्यान सत्र	अपराह्न 01.45 से 02.45 बजे
चाय	अपराह्न 02.45 से 03.15 बजे
समापन सत्र	अपराह्न 03.30 से 04.45 बजे
हाई–टी	सायं 04.45 से 05.30 बजे

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, गोरखपुर
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
स्थापित 2005 ई.

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर
आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

उदघाटन सत्र 16 अक्टूबर, 2021

समय – प्रातः 10.00–12.20

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष	–	प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त (कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश)
मुख्य अतिथि	–	डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय, (राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली)
सारस्वत अतिथि	–	डॉ. हर्षवर्धन शाही (राज्य सूचना आयुक्त, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश)
मुख्य वक्ता	–	प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी (अध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त)
स्वागत उद्बोधन	–	डॉ. प्रदीप कुमार राव (प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर)
संचालन	–	डॉ. सुबोध कुमार मिश्र (अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर)

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित 2005 ई.

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

क्षण - अनुक्षण

मंच आमंत्रण, दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि	–	10.30
सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत	–	10.30–10.32
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	10.32–10.34
स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान (अध्यक्ष, संचालन समिति, प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी द्वारा)	–	10.34–10.35
कुलगीत	–	10.35–10.37
पुस्तक विमोचन	–	10.37–10.38
स्वागत उद्बोधन	–	10.38–10.43
बीज वक्तव्य	–	10.43–11.17
महाविद्यालय बोधगीत (निर्माणों के पावन युग में .....)	–	11.17–11.19
उद्बोधन (सारस्वत अतिथि)	–	11.19–11.39
उद्बोधन (मुख्य अतिथि)	–	11.39–11.59
अध्यक्षीय उद्बोधन	–	11.59–12.18
वन्देमातरम्	–	12.18–12.20

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

स्थापित 2005 ई.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

तथा

गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

प्रथम तकनीकी सत्र 16 अक्टूबर, 2021

समय – अपराहन् : 01.30–02.40

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – **प्रो. दिनेश कुमार सिंह**
पूर्व अध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सह–अध्यक्ष – **डॉ. अविनाश प्रताप सिंह**
सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

मुख्य वक्ता – **डॉ. राजेश नायक**
आचार्य, इतिहास विभाग
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

प्रतिवेदक – **डॉ. सलिल पाण्डेय**
पोस्ट डाक्टोरल फेलो
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

संचालन – **डॉ. विनोद कुमार**
पोस्ट डाक्टोरल फेलो
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित 2005 ई.

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

क्षण - अनुक्षण

मंच आमंत्रण	–	01.30
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	01.30–01.32
स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान (डॉ. रघुवीर नारायण सिंह द्वारा)	–	01.34–01.35
उद्‌बोधन (मुख्य वक्ता)	–	01.35–01.50
शोध पत्र वाचन	–	01.50–02.10
उद्‌बोधन (सह अध्यक्ष)	–	02.10–02.20
अध्यक्षीय उद्‌बोधन	–	02.20–02.40

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

स्थापित 2005 ई.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

तथा

गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

द्वितीय तकनीकी सत्र 16 अक्टूबर, 2021

समय – अपराहन् : 03.15–04.30

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – प्रो. कमलेश गौतम
आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सह–अध्यक्ष – डॉ. मनोज तिवारी
सहयुक्त आचार्य, इतिहास विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

मुख्य वक्ता – डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
श्री गणेश राय पी.जी. कॉलेज, डोभी, जौनपुर, उत्तर प्रदेश

प्रतिवेदक – डॉ. पंकज सिंह
सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

संचालन – डॉ. कन्हैया सिंह
पोस्ट डाक्टोरल फेलो
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

स्थापित 2005 ई.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

क्षण - अनुक्षण

मंच आमंत्रण	–	03.15
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	03.15–03.17
स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान (डॉ. रघुवीर नारायण सिंह द्वारा)	–	03.17–03.18
उद्‌बोधन (मुख्य वक्ता)	–	03.18–03.33
शोध पत्र वाचन	–	03.33–03.48
उद्‌बोधन (सह अध्यक्ष)	–	03.48–04.08
अध्यक्षीय उद्‌बोधन	–	04.08–04.30

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

स्थापित 2005 ई.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

तृतीय तकनीकी सत्र 17 अक्टूबर, 2021

समय – प्रातः : 09.30–10.45

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष	–	प्रो. हरीश शर्मा आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर
सह–अध्यक्ष	–	डॉ. अजय कुमार सिंह सहायक आचार्य इतिहास विभाग स्वमी श्रद्धानन्द कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
मुख्य वक्ता	–	डॉ. अजय मिश्र प्राचार्य मज़ीदुन्निशां गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, कोपागंज, मऊ
प्रतिवेदक	–	डॉ. इक्ष्वाकु प्रताप सिंह स्वतन्त्रत शोध अध्येता
संचालन	–	डॉ. सुबोध कुमार मिश्र अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

स्थापित 2005 ई.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

क्षण - अनुक्षण

मंच आमंत्रण	–	09.30
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	09.30–09.32
उद्बोधन (मुख्य वक्ता)	–	09.32–09.42
शोध पत्र वाचन	–	09.42–10.00
उद्बोधन (सह अध्यक्ष)	–	10.00–10.20
अध्यक्षीय उद्बोधन	–	10.20–10.45

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित 2005 ई.

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

समूह परिचर्चा (पैनल डिस्कसन) सत्र

17 अक्टूबर, 2021

समय – प्रातः : 11.00–12.15

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी
अध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

विषय विशेषज्ञ –

1. डॉ. राजेश नायक (संचालन)
2. डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव
3. डॉ. ज्ञानप्रकाश मंगलम
4. डॉ. अम्बिका तिवारी
5. डॉ. राजेश कुमार
6. डॉ. पद्मजा सिंह
7. डॉ. मणिन्द्र यादव
8. डॉ. प्रवीण त्रिपाठी
9. डॉ. रितेश्वर नाथ तिवारी
10. डॉ. कन्हैया सिंह
11. डॉ. अजय कुमार सिंह
12. डॉ. शचीन्द्र मोहन

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

स्थापित 2005 ई.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

तथा

गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

विशिष्ट व्याख्यान

17 अक्टूबर, 2021

विषय– क्षेत्रीय इतिहास लेखन : स्वतंत्रता संग्राम के विशेष सन्दर्भ में

समय – अपराह्न : 01.45–02.40

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – डॉ. प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य,
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मुख्य वक्ता – प्रो. रजनीश शुक्ल
कुलपति
महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

संचालन – प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी
अध्यक्ष,
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

स्थापित 2005 ई.

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

तथा

गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

क्षण - अनुक्षण

मंच आमंत्रण	–	01.45
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	01.45–01.46
उद्बोधन (मुख्य वक्ता)	–	01.46–02.30
अध्यक्षीय उद्बोधन एवं आभार	–	02.30–02.40

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित 2005 ई.

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

तथा

गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

समापन समारोह 17 अक्टूबर, 2021

समय – अपराहनः 03.30–04.45

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष	–	प्रो. राजवन्त राव आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
मुख्य अतिथि	–	प्रो. रजनीश शुक्ल कुलपति महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
विशिष्ट अतिथि	–	डॉ. हरीश शर्मा आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर
मुख्य वक्ता	–	प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य आचार्य एवं अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
स्वागत उद्बोधन	–	डॉ. प्रदीप कुमार राव प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
संगोष्ठी प्रतिवेदन	–	डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी सहायक आचार्य, इतिहास विभाग श्री गणेश राय पी.जी. कॉलेज, डोभी, जौनपुर, उत्तर प्रदेश
संचालन	–	डॉ. सर्वेश शुक्ल पोस्ट डाक्टोरल फेलो, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित 2005 ई.

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

क्षण - अनुक्षण

मंच आमंत्रण, दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि	–	03.30
सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत	–	03.30–03.32
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	03.32–03.34
स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान (महाविद्यालय प्राचार्य द्वारा)	–	03.34–03.35
पुस्तक विमोचन	–	03.35–03.36
स्वागत उद्‌बोधन	–	03.36–03.40
संगोष्ठी रपट (प्रतिवेदन)	–	03.40–03.45
उद्‌बोधन (मुख्य वक्ता)	–	03.45–03.55
महाविद्यालय बोधगीत (निर्माणों के पावन युग में .....)	–	03.55–03.57
उद्‌बोधन (मुख्य अतिथि)	–	03.57–04.22
अध्यक्षीय उद्‌बोधन	–	04.22–04.43
वन्दे मातरम्	–	04.43–04.45

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित 2005 ई.

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

प्रथम एवं द्वितीय (संयुक्त) तकनीकी सत्र 16 अक्टूबर, 2021

समय – अपराहन् : 02.30–04.30

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष	–	प्रो. दिनेश कुमार सिंह पूर्व अध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
सह–अध्यक्ष	–	प्रो. कमलेश गौतम आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
सह–अध्यक्ष	–	डॉ. मनोज तिवारी सहयुक्त आचार्य, इतिहास विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
वक्ता	–	डॉ. राजेश नायक आचार्य, इतिहास विभाग जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार
वक्ता	–	डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी सहायक आचार्य, इतिहास विभाग श्री गणेश राय पी.जी. कॉलेज, डोभी, जौनपुर, उत्तर प्रदेश जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार
संचालन	–	डॉ. सुबोध कुमार मिश्र (अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर)

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित 2005 ई.

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
तथा
गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र
प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर

आजादी के अमृत महोत्सव (75 वर्ष) एवं चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष
के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(16 एवं 17 अक्टूबर, 2021)

क्षण - अनुक्षण

मंच आमंत्रण	–	02.30
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	02.30–02.32
स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान (डॉ. रघुवीर नारायण सिंह द्वारा)	–	02.32–02.34
उद्‌बोधन (डॉ. राजेश नायक)	–	02.34–02.54
उद्‌बोधन (डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी)	–	02.54–03.14
शोध पत्र वाचन	–	03.14–03.50
उद्‌बोधन (डॉ. मनोज तिवारी)	–	03.50–04.05
उद्‌बोधन (प्रो. कमलेश कुमार गौतम)	–	04.05–04.20
अध्यक्षीय उद्‌बोधन	–	04.20–04.40

संगोष्ठी रिपोर्ट

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

16-17 अक्टूबर, 2021

भारत का स्वाधीनता संघर्ष भारत की वह गौरव गाथा है, जिसे याद कर हर भारतीय का सर गर्व से ऊँचा हो जाता है। भारत ने अपनें स्वतंत्रा संघर्ष में जो प्रतिमान, जो आदर्श स्थापित किए हैं, वो संसार के इतिहास में अन्यत्र दुर्लभतम् है। भारत का स्वातंत्र्य समर 1857 ई. से प्रारम्भ होता है। उसके बाद से भारतवासियों नें अपनी मातृभू को विदेशी दासता से मुक्त करानें हेतु अनेकानेक आहूतियाँ दीं। हजारों-लाखों माँ भारती के सपूतों ने अपना सर्वस्व स्वतंत्रता के इस महान यज्ञ में हवि के रूप अर्पित कर दी। इस महाभियान में उत्तर प्रदेश के पूर्वी आंचल में स्थित गोरखपुर परिक्षेत्र का योगदान अविस्मरणीय है। यह वही क्षेत्र है, जिसका नेतृत्व स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर **महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज** ने किया गया। यह वही क्षेत्र है, जहाँ देश में अंग्रेजी शासन की चूलें हिला देने वाली **चौरी-चौरा जनक्रांति** की घटना घटित हुई थी। यह वही क्षेत्र है जहाँ अंग्रेजों के दमनकारी प्रयासों को **डोहरियाँ कला** के बांकुरों ने अपने सीने पर गोली खाकर किल किया था। यह वही क्षेत्र है जहाँ **बाबू बंधू सिंह** ने अपनी विशिष्ट गुरिल्ला युद्ध शैली से अनेकानेक अंग्रेज अफसरों के शीश काटकर माँ तरकुलहाँ देवी के चरणों में अर्पित किया था। यह वही क्षेत्र है जहाँ पैना, छावनी, डुमरी आदि के अगणित योद्धाओं ने स्वतंत्रता की बलि दे दी पर हँसते-हँसते अपना सब कुछ लुटा दिया। इसी क्षेत्र में भाई जी के नाम से विख्यात प्रातः स्मरणीय **हनुमान प्रसाद पोद्दार** जी ने उक्त समय के झंझावत भरे माहौल में भी गीता-प्रेस के माध्यम से भारतीय संस्कृति का अबाध प्रसार जनमानस में करते रहे। किन्तु देश का दुर्भाग्य यह है कि इस क्षेत्र के इतने महत्वपूर्ण घटनाओं और इतने महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों को भारतीय इतिहास में शडयंत्र पूर्वक उपेक्षित कर दिया गया। भारतीय इतिहास के इन्हीं उपेक्षित और लगभग भुला दिया गए इतिहास को नए सिरे से व्याख्यायित करने के उद्देश्य से महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसण, गोरखपुर द्वारा **"भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में"** विषय **पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR), नई दिल्ली** के अकादमिक एवं वित्तीय सहयोग से सम्पन्न की गई। आयोजित संगोष्ठी की एक संक्षिप्त रपट आप सबके समक्ष प्रस्तुत है।

उद्घाटन सत्र (16 अक्टूबर 2021)

नियत समय अर्थात् 16 अक्टूबर, 2021 को संगोष्ठी का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव **डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय** उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के इतिहास विभाग के आचार्य एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सदस्य **प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी** एवं सारस्वत अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश शासन के सूचना आयुक्त **श्री हर्षवर्द्धन शाही** ने अपनी उपस्थिति सुनिश्चित कराई। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रख्यात साहित्यकार **प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त** ने की। उद्घाटन सत्र का संचालन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष **डॉ. सुबोध कुमार मिश्र** ने किया। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय ने कहा कि– आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी को एक उत्सव के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास को भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिखने व देखने की आवश्यकता तो है ही, साथ ही आने वाली पीढ़ी को स्थानीय इतिहास के प्रति जागरूक करना भी आवश्यक है। इस अवसर पर सारस्वत अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री हर्षवर्द्धन शाही ने कहा कि भारतीय दार्शनिक परम्परा एवं ज्ञान ने देश-विदेश में

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त को स्मृति चिन्ह भेंट करते प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर डॉ.बालमुकुन्द पाण्डेय को स्मृति चिन्ह भेंट करते प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी को महाविद्यालय के प्रकाशन भेंट करते प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर अध्यक्षीय उद्बोधन देते प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर उद्बोधन देते डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर अतिथियों का स्वागत एवं आभार ज्ञापित करते महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर सारस्वत अतिथि के रूप में श्रोताओं का मार्गदर्शन करते हुए श्री हर्षवर्धन शाही

अपनी अमिट छाप छोड़ी है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गोरखपुर परिक्षेत्र की सक्रियता, योगदान एवं इस क्षेत्र के प्रेस की भूमिका अविस्मरणीय है। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने कहा कि– यह भारत का दुर्भाग्य रहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व एवं स्वतंत्रता के पश्चात भी भारतीय इतिहास लेखन को भारतीयता से मुक्त रखा गया। इसीलिए भारतीय इतिहास लेखन की दृष्टि ठीक नहीं रही है। पाश्चात्य एवं औपनिवेशिक इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को पराजितों के इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया। इससे भी बड़ा

दुर्भाग्य यह है कि वही इतिहास एक लम्बे समय तक भारत के सभी शिक्षण संस्थानों में पढ़ाया जाता था। भारत के स्वातंत्र्य समर में गोरखपुर परिक्षेत्र का योगदान भारत के किसी भी अन्य क्षेत्र के योगदान से कमतर नहीं है। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहा कि भारत को तोड़ने के लिए हमारे इतिहास और भाषा को तोड़ा गया क्योंकि यही वो दो माध्यम हैं जो किसी भी देश को शक्तिशाली बनाने का आधार उपलब्ध कराते हैं। विदेशियों द्वारा भारत को कमजोर करने के लिए यहां की भाषा, शिक्षा एवं समाज पर कड़ा प्रहार किया। भारतीय भाषाओं की जगह विदेशी भाषाओं को महत्व देकर हमें कुंठित किया। भारत के स्वाधीनता आन्दोलनों को यदि हम ठीक से आंकलित करें तो पाऐंगे कि भाषाई जागरूकता ने इसे और तीव्रता एवं धार प्रदान किया था। उद्घाटन सत्र के दौरान प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी द्वारा लिखित पुस्तक **'भारत निर्माण'** का विमोचन किया गया। इस अवसर पर **प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, प्रो. मनोज तिवारी, प्रो. ध्यानेन्द्र नरायण दूबे, डॉ. रामप्यारे मिश्र, डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय, डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम, डॉ. सर्वेश शुक्ल, डॉ. अनुज प्रताप सिंह, डॉ. रविन्द्र आनन्द** सहित विभिन्न विभागों के शोधार्थी एवं शहर के गणमान्य नागरिकों सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

सहभोज

प्रथम तकनीकी सत्र के समाप्त होते ही 01 बजे से 02 बजे तक सहभोज का आयोजन हुआ। सहभोज में उपस्थित समस्त अतिथि, विषय विशेषज्ञ एवं प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

प्रथम एवं द्वितीय संयुक्त तकनीकी सत्र (16 अक्टूबर, 2021)

सहभोज के तुरन्त बाद संयुक्त रूप से प्रथम एवं द्वितीय तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। इस संयुक्त सत्र की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष **प्रो. दिनेश कुमार सिंह** ने की। सह अध्यक्ष के रूप में दीनदयाल

प्रथम तकनीकी सत्र में सह अध्यक्ष के रूप में अपने विचार व्यक्त करते डॉ. मनोज कुमार तिवारी

प्रथम तकनीकी सत्र में अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करते डॉ. राजेश नायक

प्रथम तकनीकी सत्र में सह अध्यक्ष के रूप में अपने विचार व्यक्त करते प्रो. कमलेश कुमार गौतम

प्रथम तकनीकी सत्र में अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करते डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव

प्रथम तकनीकी सत्र में अपना शोध-पत्र प्रस्तुत करते डॉ. कन्हैया सिंह

प्रथम तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में अपने विचार व्यक्त करते डॉ. प्रवीन कुमार त्रिपाठी

प्रथम तकनीकी सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन द्वारा श्रोताओं एवं विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते प्रो. दिनेश कुमार सिंह

प्रथम तकनीकी सत्र में पॉवर प्वाइंट एवं प्रोजेक्टर के माध्यम से पैना ग्राम के इतिहास की विवेचना करते कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह

उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के आचार्य **प्रो. कमलेश गौतम** एवं इतिहास विभाग के आचार्य **डॉ. मनोज तिवारी** उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के इतिहास विभाग के आचार्य **डॉ. राजेश नायक** तथा गणेश राय पी.जी. कालेज, डोभी, जौनपुर के इतिहास विभाग के सहायक आचार्य **डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी** ने अपनी सारस्वत उपस्थिति दर्ज करायी। सत्र का संचालन महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष **डॉ. सुबोधकुमार मिश्र** ने किया जबकि सत्र का प्रतिवेदन आई.सी.एच.आर के

फेलो **डॉ. विनोद कुमार** ने किया। इस तकनीकी सत्र में **डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. अजय कुमार सिंह, डॉ. शचीन्द्र मोहन, डॉ. कन्हैया सिंह, डॉ. सर्वेश शुक्ल, डॉ. रितेश्वरनाथ तिवारी, डॉ. अलका सिंह, डॉ. कामिनी सिंह, सुश्री पूजा, सुश्री कंचन तिवारी** सहित 14 विद्वानों एवं शोधार्थियों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। अन्त में पावर प्वाइंट माध्यम से अपना अध्यक्षीय उद्‌बोधन प्रस्तुत करते हुए सत्राध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गोरखपुर परिक्षेत्र के योगदान पर प्रकाश डालते हुए समस्त प्रतिभागियों के प्रस्तुत शोध पत्र का सार प्रस्तुत किया एवं भावी जीवन की उन्हें शुभकामनाएं दी।

तृतीय तकनीकी सत्र (17 अक्टूबर 2021)

संगोष्ठी के दूसरे दिन अर्थात् 17 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे तृतीय तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। सत्र की अध्यक्षता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष **प्रो० हरीश शर्मा** ने की। मुख्य वक्ता के रूप में मजीदुन्निशां गर्ल्स पी.जी. कालेज, मऊ के प्राचार्य **डॉ. अजय कुमार मिश्र** एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रवक्ता **डॉ. अजय कुमार सिंह** ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। सत्र का संचालन **डॉ. आशुतोष त्रिपाठी** ने किया। इस सत्र में **श्री जयगोपाल मधेशिया,**

तृतीय तकनीकी सत्र में अध्यक्षीय उद्‌बोधन प्रस्तुत करते डॉ. हरीश कुमार शर्मा

तृतीय तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में उद्‌बोधन प्रस्तुत करते डॉ. अजय कुमार मिश्र

तृतीय तकनीकी सत्र में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते डॉ. प्रवीन कुमार त्रिपाठी

तृतीय तकनीकी सत्र में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते श्री अनूप कुमार पाण्डेय

तृतीय तकनीकी सत्र के दौरान मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि, विषय विशेषज्ञ एवं अन्य

तृतीय तकनीकी सत्र के दौरान सत्र में उपस्थित महाविद्यालय के विद्यार्थी, शोधार्थी एवं श्रोतागण

तृतीय तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में अपने विचार व्यक्त करते डॉ. अजय कुमार सिंह

तृतीय तकनीकी सत्र में अपने शोध पत्र का वाचन करते डॉ. आशुतोष कुमार त्रिपाठी

डॉ. शत्रुजीत सिंह, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. प्रवीण त्रिपाठी, डॉ. ब्रजभूषण यादव सहित 09 लोगों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। सत्र के अन्त में महाविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य **डॉ. विजय कुमार चौधरी** नें सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

समूह परिचर्चा सत्र

तृतीय तकनीकी सत्र के उपरान्त एक मुक्त समूह परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गया। इस मुक्त समूह परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के इतिहास विभाग के आचार्य **डॉ. राजेश नायक** ने की। सह अध्यक्ष के रूप में दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर के इतिहास विभाग के आचार्य **डॉ. मनोज तिवारी** उपस्थित रहे। इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. ज्ञानप्रकाश मंगलम, डॉ. रितेश्वरनाथ त्रिपाठी, डॉ. प्रवीण त्रिपाठी, डॉ. अजय कुमार सिंह, डॉ. अम्बिका तिवारी** आदि ने भी अपनी उपस्थिती दर्ज करायी। मुक्त परिचर्चा सत्र का विषय प्रवर्तन करते हुए सत्राध्यक्ष डॉ. राजेश नायक के कहा कि–

समूह परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता करते डॉ. राजेश कुमार नायक

भारतीय स्वंतत्रता संग्राम रूपी सलिला की एक सशक्त एवं महान धारा गोरखपुर परिक्षेत्र से भी प्रवाहित होती है। गोरखपुर परिक्षेत्र के **चौरी-चौरा, डोहरिया कला, महुआडाबर, पैना, छावनी, सतासी राज** इत्यादि स्थल इस बात के मौन साक्षी है कि यह क्षेत्र किसी समय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अगुआ था। पूर्वांचल की यह धारती तत्कालीन नाथपंथ के पीठाधीश्वर **ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज** के कुशल नेतृत्व में संगठित होकर अंग्रेजी सत्ता का सामूहिक प्रतिकार किया था। आज आवश्यकता है इतिहास के पन्नों में इस पूर्वांचल के क्षेत्र के इन अदम्य बलिदानों

समूह परिचर्चा सत्र में उपस्थिति विषय विशेषज्ञ, शोधार्थी एवं श्रोतागण

समूह परिचर्चा सत्र के दौरान विषय विशेषज्ञों से अपनी जिज्ञासा पूछता प्रतिभागी

को समावेशित करने की जो हमारे युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकें। विषय प्रवर्तन के उपरान्त एक-एक करके सभी विषय विशेषज्ञों ने अपनी-अपनी बात रखी। तत्पश्चात श्रोताओं और महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने अपनी जिज्ञासाएं एवं प्रश्न विषय विशेषज्ञों के सामने रखा जिसका उत्तर विषय विशेषज्ञों द्वारा दिया गया।

सहभोज

समूह परिचर्चा सत्र के समाप्त होते ही 01 बजे से 02 बजे तक सहभोज का आयोजन हुआ। जिसमें उपस्थित समस्त अतिथि, विषय विशेषज्ञ एवं प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

विशेष व्याख्यान कार्यक्रम

भोजन के उपरान्त एक विशिष्ट व्याख्यान सत्र का आयोजन महाविद्यालय के श्रीराम सभागार में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालयय वर्धा के कुलपति **प्रो. रजनीश शुक्ल** ने **'क्षेत्रीय इतिहास लेखन'** विषय पर अपना सारगर्भित उद्‌बोधन देते हुए कहा कि किसी भी क्षेत्र की प्राचीनता एवं इसका गौरवशाली अतीत वर्तमान के युवाओं की प्रेरणा का आधार बनता है। भारत के समग्र इतिहास का वास्तविक लेखन तब तक पूरा नहीं हो सकता, जब तक कि हम भारत के अलग-अलग

क्षेत्रीय इतिहास लेखन विषय पर अपना विचार प्रस्तुत करते प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

क्षेत्रों का क्षेत्रीय इतिहास ठीक से न लिखें। इसके लिए हम सभी को अपने क्षेत्रीय इतिहास से वाकिफ होना पड़ेगा। क्षेत्रीयत का ही संगठित रूप राष्ट्रीयता कहलाती है। एक राष्ट्र के रूप में भारत का गौरव गाथा तथा समृद्ध इतिहास के हम उत्तराधिकारी हैं। अत: यह हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम अपने उत्तराधिकारियों के लिए भी राष्ट्र की अस्मिता एवं अखंडता के वाहक के रूप में अपने इतिहास को और अधिक समृद्ध एवं प्रमाणिक तथ्यों से परिपूर्ण करें जिसके कि भारत का वह इतिहास जो वामपंथी एवं साम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा विदूषित किया गया, उसे हम ठीक कर सकें। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य **डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने तथा संचालन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के मानद सदस्य **प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी** ने की।

समापन समारोह - 17 अक्टूबर, 2021

विशिष्ट व्याख्यान सत्र के तुरन्त बाद दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के पूर्व अध्यक्ष **प्रोफेसर राजवंत राव** ने की। मुख्य अतिथि के रूप में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति **प्रोफेसर रजनीश शुक्ल** तथा मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत के सचिव **प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य** भी उपस्थित रहे। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता प्रो. मौर्य ने कहा कि भारत इतिहास को जिस रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, उसे उस रूप में न कर हर प्रकार से विकृत करके प्रस्तुत किया गया है। भारतीय समाज एवं संस्कृति की यदा-कदा कमियों को

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. रजनीश शुक्ल को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत करते महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर डॉ. अल्का सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'युगद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द' का विमोचन करते आदरणीय मंचासीन अतिथि

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर अध्यक्षीय उद्बोधन देते कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. राजवन्त राव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उद्बोधन देते प्रो. दिग्विजयनाथ पौर्य

मुख्य वक्ता प्रो. दिग्विजयनाथ पौर्य को स्मृति चिन्ह भेंट करते महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

अतिशय महिमा मण्डित कर विवेचित किया गया है। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. रजनीश शुक्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय इतिहास को व्यापक रूप में समझना होगा। वास्तव में इतिहास घटित होता है, निर्देशित नहीं। भारत का वर्तमान लिखित इतिहास औपनिवेशिक विचारधारा द्वारा निर्देशित है। इसे वर्तमान पीढ़ी को ठीक करना ही होगा। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कार्यक्रम

अध्यक्ष प्रो. राजवंत राव ने कहा कि गोरखपुर परिक्षेत्र का स्वातंत्र्य समर भारत के किसी अन्य क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम से किसी भी मामले में कम नहीं है अंतर केवल इतना है कि गोरखपुर परिक्षेत्र की घटनाओं को इतिहासकारों ने इतिहास पटल पर उचित प्रकार से प्रस्तुत नहीं किया है। चाहे वह चौरी-चौरा की घटना हो, गोरखपुर के आस-पास के क्षेत्रों की घटनाएं हों, यहाँ के सांस्कृतिक एवं धार्मिक आन्दोल हों, आन्दोलनों में जनभागीदारी हो, आन्दोलन के भावना को समझनें की बात हो इस सभी मामलों में यहाँ का इतिहास सदा ही उपेक्षा का शिकार रहा है। पिछले कुछ वर्षों से सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के परिणामस्वरूप इतिहास की इन गलतियों के विरूद्ध समाज मुखर हुआ है और सरकार के ऊपर यह दबाव है कि इन गलतियों को सुधारा जाए। इतिहास को पुर्नसंकलित एवं पुनरावलोकित किया जाए। इसी क्रम में दो दिनों तक चलने वाली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का संपूर्ण प्रतिवेदन श्रीगणेश राय पी.जी. कालेज के इतिहास विकास के आचार्य **डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी** ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के पोस्ट डाक्टोरल फेलो **डॉ. सर्वेश शुक्ल** ने किया जबकि महाविद्यालय के प्राचार्य **डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने समस्त अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर डॉ. विनोद कुमार द्वारा लिखित पुस्तक 'वैष्णव आगम में प्रतिमा विज्ञान' का विमोचन करते आदरणीय मंचासीन अतिथि

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

आजादी के अमृत महोत्सव एवं चौरी-चौरा शताब्दी वर्ष

के अन्तर्गत

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

द्वारा प्रायोजित

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत

तथा

गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग और इतिहास विभाग

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

द्वारा

भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में

विषय पर आयोजित दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भाद्रपद कृष्ण द्वादशी एवं त्रयोदशी, युगाब्ध-5123, वि.सं. 2078

तद्नुसार 16 एवं 17 अक्टूबर, 2021 ई.

उद्घाटन सत्र

16-17 अक्टूबर, 2021 को भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रांत तथा गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति और इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ के संयुक्त

उद्घाटन समारोह में उपस्थित मंचस्थ अतिथि

आजादी का अमृत महोत्सव एवं चौरी चौरा घटना का शताब्दी वर्ष

उद्बोधन देते विशिष्ट अतिथि श्री हर्षवर्धन शाही

बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी

तत्वावधान में भारत का स्वातंत्र्य समय : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन 16 अक्टूबर को हुआ जिसके मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय उपस्थित रहे। संगोष्ठी का बीज वक्तव्य दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने प्रस्तुत किया। बतौर विशिष्ट अतिथि उ.प्र. के राज्य सूचना आयुक्त श्री हर्षवर्धन शाही भी समारोह में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने की। इस अवसर पर सभी अतिथियों का स्वागत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने तथा कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुबोध कुमार मिश्र ने किया।

उद्बोधन देते मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय

अध्यक्षीय उद्बोधन देते कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त

अतिथियों का स्वागत एवं आभार व्यक्त करते प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्रथम एवं द्वितीय संयुक्त तकनीकी सत्र

विषय विशेषज्ञ के रूप में उद्‌बोधन देते डॉ. राजेश नायक

उद्‌घाटन समारोह के तत्काल बाद प्रथम एवं द्वितीय तकनीकी सत्रों को एक साथ मिलाकर संयुक्त तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस संयुक्त सत्र की अध्यक्षता दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने की। सह अध्यक्ष के रूप में दी.उ.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के आचार्य डॉ. मनोज तिवारी एवं प्राचीन इतिहास विभाग के आचार्य प्रो. कमलेश गौतम उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार के इतिहास विभाग के आचार्य डॉ. राजेश नायक तथा श्रीगणेशाय पी.जी. कालेज, डोभी, जौनपुर के इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीन कुमार त्रिपाठी भी उपस्थित रहे। इस सत्र में डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. कन्हैया सिंह, डॉ. सर्वेश शुक्ल, डॉ. अभय कुमार सिंह,

अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते सत्राध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह

तकनीकी सत्र के दौरान विचार व्यक्त करते प्रो. कमलेश गौतम

तकनीकी सत्र के दौरान विचार व्यक्त करते डॉ. मनोज तिवारी

शोध-पत्र प्रस्तुत करते करते डॉ. कन्हैया सिंह

डॉ. शचीन्द्र मोहन, डॉ. रितेश्वर नाथ तिवारी, डॉ. अलका सिंह, डॉ. कामिनी सिंह, शोधार्थी सुश्री प्रज्ञा, सुश्री कंचन सहित 14 लोगों ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। सत्र का संचालन डॉ. सुबोध कुमार मिश्र तथा प्रतिवेदन डॉ. विनोद कुमार ने किया। सत्र के अन्त के सत्राध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने पी.पी.टी. के माध्यम से अपना उद्‌बोधन प्रस्तुत किया।

सत्र का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी

तृतीय तकनीकी

संगोष्ठी के दूसरे दिन अर्थात् 17 अक्टूबर को प्रातः 10 बजे तृतीय तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। सत्र की अध्यक्षता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. हरीश शर्मा ने की। मुख्य वक्ता के रूप में मजीदुन्निशां गर्ल्स पी.जी. कालेज, मऊ के प्राचार्य डॉ. अजय कुमार मिश्र एवं विषय विशेषज्ञ के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रवक्ता डॉ. अजय कुमार सिंह ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। सत्र का संचालन डॉ. आशुतोष त्रिपाठी ने किया। इस सत्र में डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, श्री जयगोपाल मधेशिया, डॉ. शत्रुजीत सिंह, डॉ. विनोद कुमार, डॉ. प्रवीण त्रिपाठी, डॉ. ब्रजभूषण यादव सहित 09 लोगों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। सत्र के अन्त में महाविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य डॉ. विजय कुमार चौधरी नें सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

तकनीकी सत्र में मंचस्थ अतिथि एवं विषय विशेषज्ञ

अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते सत्राध्यक्ष डॉ. हरीश शर्मा

विषय विशेषज्ञ के रूप में विचार व्यक्त करते डॉ. अजय मिश्र

एमपीपीजी कॉलेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी से निकली बात, विद्यार्थियों को ऐतिहासिक घटनाक्रमों से अवगत कराने पर जोर

इतिहास को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखने की जरूरत

संगोष्ठी

गोरखपुर | प्रमुख संवाददाता

शनिवार को एमपीपीजी कॉलेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान मंच पर मौजूद अतिथिगण।

आजादी के बाद एक साजिश के तहत इतिहास लेखन में लाखों भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को भुला दिया गया। इतिहास में उनके उचित स्थान और सम्मान को पुनर्स्थापित किए जाने की जरूरत है। असल में भारत के इतिहास को भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिखने और देखे जाने की आवश्यकता है।

ये बातें अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय ने शनिवार को महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ में 'भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि कहीं। उन्होंने कहा कि शिक्षण संस्थाओं को चाहिए कि वे गोरखपुर के विद्यार्थियों को इस अंचल के ऐतिहासिक घटनास्थलों से परिचित जरूर कराएं। तभी इतिहास के पुनर्मूल्यांकन व पुनर्खोज को आवश्यक गति मिल सकेगी। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहा कि भारत को तोड़ने के लिए हमारे इतिहास और भाषा को तोड़ा गया क्योंकि यही वो दो माध्यम हैं जो किसी भी दोनों ही किसी देश को शक्तिशाली बनाने का आधार उपलब्ध कराती हैं।

कार्यक्रम में बतौर सारस्वत अतिथि राज्य सूचना आयुक्त हर्षवर्धन शाही ने कहा कि भारतीय दार्शनिक परम्परा और ज्ञान ने देश-विदेश में अपनी छाप छोड़ी है। महात्मा बुद्ध, श्रीकृष्ण, पतंजलि, गुरु गोरखनाथ और आचार्य रजनीश उस परम्परा से आते हैं, जिससे भारतीयता को बल मिलता है। श्री शाही ने छात्रों से सवाल-जवाब के जरिए जीवंत संवाद किया और संस्मरणों के जरिए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पूर्वांचल की पत्रकारिता के योगदान को खासतौर पर रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि ऐसी संगोष्ठियों का अर्थ तभी है जब ये छात्र-छात्राओं के लिए फलदायी हों।

उन्होंने कहा कि कड़वा अनुभव है भारतीय शिक्षा प्रणाली में काफी कुछ अ[illegible] दुरुह, क्लिष्ट लिखा-पढ़ा जाता है [illegible] प्रधान तत्व इतना नीरस होता है कि वे के[illegible] लाइब्रेरी या म्यूजियम का हिस्सा बनकर[illegible] जाता है। यही वजह है कि बहुत से विद्[illegible] ज्ञान अर्जित करने आते हैं, डिग्री लेकर [illegible] हैं, ज्ञान साथ में जाता ही नहीं।

मुख्य वक्ता के रूप में डीडीयू[illegible] इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हि[illegible] चतुर्वेदी ने कहा कि भारतीय इतिहास [illegible] को भारतीयता से मुक्त रखा गया, [illegible] भारतीय इतिहास लेखन की दृष्टि [illegible] नहीं रही। यदि स्वातंत्र्य समर में [illegible] परिक्षेत्र के योगदान की बात की [illegible] क्षेत्र झांसी, रुहेलखण्ड व [illegible] परिक्षेत्र के ही समकक्ष खड़ा [illegible]

पहले और दूसरे सत्र में पढ़े गए शोध पत्र

गोरखपुर। उद्घाटन सत्र के बाद संगोष्ठी के पहले और दूसरे तकनीकी सत्र में एक दर्जन से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। इन तकनीकी सत्रों में मुख्य वक्ता जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के आचार्य डॉ. राजेश नायक रहे। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता गोरखपुर विवि के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार सिंह ने की। श्री गणेश राय पी.जी. कॉलेज डोभी, जौनपुर के इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी, तकनीकी सत्र के सह-अध्यक्ष के रूप में गोरखपुर विवि के इतिहास विभाग के सहयुक्त आचार्य डॉ. मनोज कुमार तिवारी और गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के आचार्य प्रो. कमलेश कुमार गौतम ने भी विचार रखा। दोनों तकनीकी सत्रों में 14 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। संगोष्ठी के उद्घाटन और तकनीकी सत्रों का संचालन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के प्रभारी डॉ. सुबोध कुमार मिश्र ने किया।

आज होगा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन 17 अक्टूबर को होगा। इस अवसर पर मुख्य रूप से महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश शुक्ल, गोरखपुर विवि के प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग के आचार्य प्रो. राजवंत राव, प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के हिन्दी विभाग के आचार्य प्रो. हरीश शर्मा सहित कई विद्वान मौजूद रहेंगे।

भारतीयता से दूर रखा गया आजादी की लड़ाई का इतिहास : प्रो. हिमांशु

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में आचार्य प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने कहा, स्वतंत्रता प्राप्ति और इसके बाद के भारतीय इतिहास लेखन को भारतीयता से दूर रखा गया। इसलिए भारतीय इतिहास लेखन की दृष्टि ही ठीक नहीं रही।

शनिवार को महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूषण में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। राज्य सूचना आयुक्त हर्षवर्धन शाही ने कहा कि भारतीय दार्शनिक परंपरा व ज्ञान ने विदेश में भी अपनी छाप छोड़ी है। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुंद पांडेय ने कहा कि भारत के इतिहास को भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिखने व देखने की जरूरत है। अध्यक्षता हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त ने की। उद्घाटन सत्र के बाद संगोष्ठी के पहले और दूसरे तकनीकी सत्र में एक दर्जन से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। इन तकनीकी सत्रों में जयप्रकाश विश्वविद्यालय के छपरा के आचार्य प्रो. राजेश नायक, गणेश राय पीजी कॉलेज डो भी जौनपुर के सहायक आचार्य डॉ. प्रवीण त्रिपाठी, गोरखपुर विश्वविद्यालय के सह आचार्य डॉ. मनोज तिवारी, प्रो. कमलेश गौतम आदि ने भी विचार रखे। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. दिनेश सिंह ने की। ब्यूरो

Scanned with OKEN Scanner

भारतीयता से दूर रहा आजादी की लड़ाई का इतिहास : प्रो. हिमांशु

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के आचार्य प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति और इसके बाद के भारतीय इतिहास लेखन को भारतीयता से दूर रखा गया। दरअसल भारतीय इतिहास लेखन की दृष्टि ही ठीक नहीं रही। यदि स्वातंत्र्य समर में गोरखपुर परिक्षेत्र के योगदान की बात की जाए तो यह क्षेत्र रुहेलखंड और बुंदेलखंड के समकक्ष खड़ा मिलेगा।

वह 'स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र के विशेष संदर्भ में' विषय पर महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगलधूसड़ में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। संगोष्ठी भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली और भारतीय इतिहास संकलन समिति के संयुक्त तत्वावधान में हुई। राज्य सूचना आयुक्त हर्षवर्धन शाही ने कहा कि भारतीय दार्शनिक परंपरा व ज्ञान ने विदेश में भी अपनी छाप छोड़ी है। महात्मा बुद्ध, श्रीकृष्ण, पतंजलि, गुरु गोरखनाथ व आचार्य रजनीश उस परंपरा से आते हैं, जिससे भारतीयता को बल मिलता है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डा. बालमुकुन्द पाण्डेय ने कहा कि भारत के इतिहास को भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिखने व देखने की जरूरत है। इतिहास के पुनर्लेखन से इसको गति मिल सकती है।

अध्यक्षीय संबोधन में हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद गुप्त ने कहा कि भारत को तोड़ने के लिए हमारे इतिहास और भाषा को तोड़ा गया, क्योंकि यही वह दो माध्यम हैं जो किसी भी देश को मजबूत या कमजोर कर सकते हैं। उद्घाटन सत्र के बाद संगोष्ठी के पहले और दूसरे तकनीकी सत्र में एक दर्जन से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। तकनीकी सत्रों में जयप्रकाश विश्वविद्यालय के छपरा के आचार्य प्रो. राजेश नायक, गणेश राय पीजी कालेज डोभी जौनपुर के सहायक आचार्य डा. प्रवीण त्रिपाठी, गोरखपुर विश्वविद्यालय के सह आचार्य डा. मनोज कुमार तिवारी, प्रो. कमलेश कुमार गौतम आदि ने भी विषय पर अपने विचार रखे।

तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. दिनेश सिंह ने की। उद्घाटन सत्र का संचालन डा. सुबोध कुमार मिश्र ने किया। इस दौरान डा. अजय कुमार सिंह, डा. शचींद्र मोहन, डा. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डा. कन्हैया सिंह, डा. सर्वेश्वर शुक्ला, डा. रितेश्वर तिवारी, जय गोपाल मद्धेशिया, अजय यादव, अस्मित शर्मा, पवन सिंह आदि ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन कालेज प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव ने किया।

Scanned with OKEN Scanner

गोरखपुर को इतिहास में नहीं मिला उचित स्थान

गोरखपुर | निज संवाददाता

गोरखपुर परिक्षेत्र का स्वातंत्र्य समर भारत के किसी अन्य क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम से किसी भी मामले में कम नही है,गोरखपुर की घटनाओं को इतिहासकारों ने इतिहास पटल पर उचित ढंग से प्रस्तुत नहीं किया।

यह बातें दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजवन्त राव ने कही। वे महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में 'भारत का स्वातंत्र्य समर : गोरखपुर परिक्षेत्र' विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के समापन समारोह को बतौर अध्यक्ष संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जितना महत्व एक विशेष विचारधारा, एक विशेष व्यक्ति, विशेष पार्टी एवं विशेष क्षेत्र को दिया गया, उतना महत्व गोरखपुर की घटनाओं को कभी नहीं मिला।

एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूषण में रविवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई।

7 शोधार्थियों ने पढ़ा शोध पत्र

इससे पूर्व तकनीकी सत्र की अध्यक्षता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के प्रो. हरीश शर्मा ने की। मुख्य वक्ता मनीदुन्निशां गर्ल्स पीजी कॉलेज, मऊ के प्राचार्य डॉ. अजय मिश्र रहे। सत्र में 7 शोधार्थियों ने अपना शोध पत्र पढ़ा। इसके बाद समूह परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के डॉ. राजेश नायक ने की। इसके बाद एक विशिष्ट व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश शुक्ल ने कहा कि भारतीय इतिहास को व्यापक रूप में समझने के लिए हमें वर्मा, भूटान, नेपाल, तिब्बत, चीन आदि देशों के इतिहास को समझना होगा। लिखित इतिहास औपनिवेशिक विचारधारा द्वारा निर्देशित है। मुख्य वक्ता डीडीयू के प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य ने कहा कि भारतीय इतिहास को जिस रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, उसे उस रूप में न कर हर प्रकार से विकृत कर प्रस्तुत किया गया।

Scanned with OKEN Scanner